GOVT. OF INDIA RNI NO.: UPBIL/2015/62096
UGC Approved Care Listed Journal
ISSN 2229-3620

TIS

SHODH SANCHAR Bulletin

An International Multidisciplinary Quarterly Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10
Issue 40
October to December 2020

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

UGC APPROVED
CARE LISTED JOURNAL
GOVT. OF INDIA RNI NO. - UPBIL/2015/62096

ISSN No. 2229-3620

TIS

SHODH SANCHAR Bulletin

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

• Vol. 10 • Issue 40 • October - December 2020

EDITORIAL BOARD

Prof. Surya Prasad Dixit
Lucknow University, Lucknow

Prof. Shraddha Singh
Banaras Hindu University

Prof. Santosh Kumar Shukla
Jawahar Lal Nehru University, New Delhi

Prof. Pawan Sharma
Meerut University, Meerut

Prof. Karuna Shankar Upadhyay
Mumbai University, Mumbai

Prof. Hemraj Sundar
Mahatma Gandhi Sansthan, Moka, Mauritius

Prof. Abdul Alim
Aligarh Muslim University, Aligarh

Prof. Susheel Kumar Sharma
Mizoram University, Mizoram

Prof. Padam Kant
Lucknow University, Lucknow

Prof. Arbind Kumar Jha
BBA Central University, Lucknow

Prof. Sheela Mishra
Usmania University, Hyderabad

Prof. Nagendra Ambedkar Sole
Central University of Rajasthan

EDITOR IN CHIEF

Dr. Vinay Kumar Sharma
Chairman
Sanchar Educational & Research Foundation, Lucknow

PUBLISHED BY

sanchar
Educational & Research Foundation

SHODH SANCHAR BULLETIN FAMILY

Honorary Patrons

Prof. Nageshwar Rao
Vice-chancellor
Indira Gandhi National Open University
New Delhi

Prof. Nirmala S Mourya
Vice-chancellor
Veer Bahadur Singh Purvanchal University
Jaunpur

Prof. Chetan Trivedi
Vice-chancellor
Bhakta Kavi Narsinh Mehta University
Junagadh, Gujarat

Prof. Manoj Dixit
Former Vice-chancellor
Dr. Ram Manohar Lohia Awadh University
Faizabad

Special Advisory Committee

K.K. Yadav (IPS)
Post Master General, Varanasi

Dr. Daau ji Gupt
International Chairman- Vishwa Hindi Samiti, New York

Prof. Suresh Rituparn
Director- Birla Foundation, New Delhi

Prof. Tribhuvan Nath Shukla
Chairman- Akhil Bhartiya Sahitya Parishad

Prof. Ramesh Chandra Tripathi
University of Lucknow, Lucknow

Prof. N.G. Devki
Cochin University, Kerala

Prof. Arun Hota
West Bengal State University, Baarasaat, Kolkata

Prof. K. Sita Lakshmi
Andhra University, Vishakhapatnam

Editorial Advisory Committee

Prof. K.S. Upadhyay, University of Mumbai.

Prof. Arjun Chahvan, Shivaji University, Kolhapur

Prof. R.B. Ram, B.B.A.U., Lucknow

Prof. Prem Shankar Tiwari, University of Lucknow

Prof. K.D. Singh, University of Lucknow, Lucknow

Prof. PadamKant, University of Lucknow, Lucknow

Prof. Harishankar Mishra, University of Lucknow

Prof. Yogendra Pratap Singh, University of Lucknow

Prof. Abdul Aleem, Aligarh Muslim University, Aligarh

Prof. Sheela Mishra, Usmania University, Hyderabad

Prof. Susheel Kumar Sharma, Mizoram University

Dr. Pradeep Dixit, Director- Utkarsh Academy, Kanpur

Dr. Dilip Sharma, Nagaanv College, Nagaanv, Assam

Prof. U.C. Vashistha, University of Lucknow, Lucknow

Prof. Amita Bajpayee, University of Lucknow, Lucknow.

Prof. Arbind Kumar Jha, B.B.A.U., Lucknow

Prof. C.B.Sharma, Chairman, NIOS, New Delhi

Prof. Shradha Singh, Banaras Hindu University

Prof. Pawan Sharma, Meerut University, Meerut

Foreign Editorial Advisory Committee

Dr. Vijay Kumar Mehta
Vishwa Hindi Samiti, New York, America

Dr. Padmesh Gupta
Chairman, UK Hindi Samiti, London

Prof. Hemraj Sundar
Mahatma Gandhi Sansthan, Moka, Mauritius

Sneh Thakur
Editor- Vasudha, Toronto, Canada

Usha Raje Saxena
Vice President, UK Hindi Samiti, London

Dr. Suresh Chandra Shukla
Chairman- Indo Norwegian Information & Cultural Forum, Norway

Dr. Usha Devi Shukla
University of Durban, Durban, South Africa

Dr. Ghanshyam Sharma
University of Venice, Italy

Dr. Ram Prasad Bhatt
Hamburg University, Germany

27.	A STUDY ON PEOPLE ENGAGEMENT IN VARIOUS ACTIVITIES DURING FIRST LOCKDOWN IN GUJARAT	Dr. Hardik Bhadeshiya Dr. Prakashkumar Patel Dr. Baxiskumar I. Patel	154
28.	ORISSA FAMINE OF 1866 : FAILURE OF RICE PRODUCTION AND ADMINISTRATIVE SYSTEM IN CUTTACK DISTRICT	Swagatika Dash	160
29.	A REVIEW OF FINANCIAL INCLUSION IN INDIA	Damanpreet Kaur	165
30.	CHANGES IN HOUSE TYPES OF RURAL MEITEI VILLAGES IN TWO THE VALLEY DISTRICTS OF MANIPUR IN THE CONTEXT OF SUSTAINABLE WELL-BEING	Rajkumar Shakhensana Singh	171
31.	AN INSIGHT INTO CORPORATE GOVERNANCE PRACTICES IN INDIA: OPPORTUNITIES & CHALLENGES	Alka Pandey Dr. O. P. Gupta Payal Rajpoot	176
32.	EXPLORING POTENTIAL OF "BATTLEFIELD TOURISM" AS A REVIVING STRATEGY IN THE POST PANDEMIC ERA: A STUDY OF PUNJAB	Sudipta Mukherjee Dr. Madhumita Mukherjee Prof. (Dr.) Sharad Kumar Goel	183
33.	N.G.O. AND CHILD-LABOURERS: A MICROSTUDY OF THE SAMARITAN-ROLE OF AN UTTAR DINAJPUR (W.B.)-BASED ORGANISATION	Sreeparna Chattopadhyay	191
34.	HAS SETTING UP OF INDUSTRIAL GROWTH CENTRE REALLY BENEFITTED PULWAMA: RESIDENTS PERSPECTIVE	Ajaz Ahmad Ganaie Dr. Anjali Mehra	197
35.	मनोवैज्ञानिक कठोरता के सम्बन्ध में समस्या–निवारण कौशल का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	सुमित पाण्डे डॉ0 डी0 एस0 गड़िया	203
36.	अद्वितीय समाजसेवी सावरकर	अमन अग्रवाल	208
37.	गिरमिटिया मजदूरों की एक दासता : लाल पसीना	भागीरथी राणा	214
38.	रमेश चन्द्र शाह की डायरी का रोचक और यात्रानुभवों का मूल्यांकन	कृपा शंकर	219
39.	मेवाड़ प्रजामंडल में मोहनलाल सुखाडिया का योगदान	अंकुर सालोदिया डॉ. पीयूष भादविया	223
40.	राजस्थान के मेव समुदाय के आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक	आसीन खाँ	228
41.	भारत में महिला बेरोजगारी एवं सरकारी प्रयास	डॉ० अलका नायक डॉ० वर्षा राहुल	233

ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE
SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 10, Issue 40, October - December, 2020
Page Nos. 223-227
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

मेवाड़ प्रजामंडल में मोहनलाल सुखाडिया का योगदान

अंकुर सालोदिया*
डॉ. पीयूष भादविया**

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र में मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना, कार्य एवं उसमें राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया के योगदान की चर्चा की गई है। मेवाड़ रियासत में प्रजामण्डल आन्दोलन उत्तरदायी शासन की मांग के लिए किया गया था। ऐसे ही आन्दोलन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रेरणास्वरूप 1938 ई. से अन्य देशी रियासतों में भी हो रहे थे। मेवाड़ प्रजामण्डल के गठन के एक वर्ष के बाद मोहनलाल सुखाडिया ने भागीदारी की। इसके प्रथम अधिवेशन के आयोजन एवं व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अग्रणीय कार्यकर्ता के रूप में उभरे। अंग्रेजों द्वारा यातना देने के बावजूद, वे झुके नहीं और प्रजामण्डल के कार्यों को आगे बढ़ाया। उनके प्रयासों से मेवाड़ की जनता ने आन्दोलन के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया। मेवाड़ के महाराणा ने अपनी सरकार में उन्हें राज्य के लोकप्रिय मंत्रीमण्डल में शामिल किया।

Keywords: मेवाड़ प्रजामंडल, मोहनलाल सुखाडिया, उत्तरदायी शासन, कांग्रेस, देशी रियासत

अंग्रेजी राज्य की स्थापना के साथ–साथ भारत प्रशासनिक दृष्टि से प्रमुख रूप से दो भागों में विभाजित हो गया, ब्रिटिश भारत और रियासती भारत। ब्रिटिश भारत में कतिपय केन्द्रशासित प्रदेशों के अलावा 11 प्रान्त थे। प्रत्येक प्रान्त का शासक गवर्नर अथवा लेफ्टिनेंट गवर्नर होता था, जो भारत के गवर्नर जनरल के प्रति उत्तरदायी होता था। रियासती भारत छोटी बड़ी 562 रियासतों में विभक्त था।[1]

19 वीं शताब्दी में राजस्थान प्रदेश 19 रियासतों, तीन ठिकानों नीमराणा–कुशालगढ़–लावा तथा एक चीफशिप अजमेर–मेरवाड़ा में विभक्त था। प्रत्येक रियासत में एक ब्रिटिश रेजिडेंट अधिकारी की नियुक्ति की गयी थी। संधि की शर्त के अनुसार ब्रिटिश अधिकारी राज्य के आंतरिक मामलो में हस्तक्षेप नहीं करेंगे, परन्तु जल्द ही यह स्थिति बदल गयी और संपूर्ण भारत पर ब्रिटिश झंडा लहराने लग गया।

1915 ई. में गाँधी के भारत वापसी पर संगठित तरीके से ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आन्दोलन किये गए। गाँधी द्वारा किये गए आंदोलनों तथा ब्रिटिश सरकार के क्रूर निर्णयों यथा रौलेट एक्ट, जलियांवाला हत्याकांड का प्रभाव ब्रिटिश भारत की जनता के साथ साथ रियासती जनता पर भी पड़ा। रियासती जनता ने अनुभव किया, यदि ब्रिटिश सरकार की सर्वोच्च सत्ता के विरुद्ध सफलतापूर्वक अहिंसात्मक आन्दोलन किया जा सकता है, तो राज्यों में भी राजनीतिक अधिकारों के लिए आन्दोलन चलाया जा सकता है।

कांग्रेस की गतिविधियां ब्रिटिश शासित प्रदेशों तक सीमित थीं। यहाँ तक कि 1920 ई. के असहयोग आन्दोलन में रियासती प्रदेशों का भू–भाग सम्मिलित नहीं था। कांग्रेस ने 1920 ई.के नागपुर अधिवेशन में प्रस्ताव पारित किया था, कि वह रियासती प्रदेशों के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी। गाँधी भी इसी विचार के समर्थक थे, कि कांग्रेस का उद्देश्य ब्रिटिश से स्वराज्य प्राप्त करना है। जब कांग्रेस अपने उद्देश्य प्राप्त कर लेगी तो, रियासती

*सीनियर रिसर्च फेलो, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर
**सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रदेशों की समस्या अपने आप सुलझ जाएगी। अगर किसी भारतीय रियासत में स्वराज्य की प्राप्ति होती है, तो यह ब्रिटिश भारत पर बहुत कम प्रभाव डाल पायेगी। गाँधी का मानना था कि रियासती राजा भारतीय होने के नाते किसी न किसी समय ब्रिटिश राज का विरोध करेंगे। इसलिए वो राजाओं को नाराज नहीं करना चाहते थे।

इस प्रकार भारत की आजादी के लिए स्थापित अखिल भारतीय संगठन कांग्रेस ने रियासती प्रदेश की जनता को राजाओं के रहमो–करम पर छोड़ दिया, किन्तु जब 1921 ई. में ब्रिटिश राज के सहयोग से भारतीय राजाओं ने 'नरेन्द्र मंडल' की स्थापना की तब कांग्रेस ने भी 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्' के गठन को मंजूरी प्रदान कर दी और 1933 ई. में इसका कार्य प्रारम्भ किया। इसके अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरु बने।

1938 ई. में हरिपुरा कांग्रेस में देशी राज्यों के सम्बन्ध में एक बहुत महत्वपूर्ण राजनैतिक निर्णय लिया गया। जिसके अनुसार रियासती जनता को स्वयं अपने पांवों पर दृढ़ता के साथ खड़े होकर राजनैतिक संघर्ष करने का परामर्श दिया गया था। तदनुसार 1938 ई. का वर्ष रियासती जनता के लिए राजनैतिक दृष्टि से सबसे अधिक सार्थक सिद्ध हुआ।[ञ]

1938 ई.के हरिपुरा अधिवेशन के निर्णय के पश्चात् देश के कोने कोने में जनता अपने खोये हुए अधिकारों को प्राप्त करने को आतुर थी और उसके असर से मेवाड़ भी अछूता नहीं रहा। सबसे पहले 'मेवाड़ प्रजामंडल' की नींव डालने की प्रेरणा बिजोलिया आन्दोलन के प्रमुख नेता माणिक्यलाल वर्मा ने दी और उसके बाद वह संगठन अप्रैल, 1938 ई.में उदयपुर से कार्य प्रारम्भ किया गया।[द]

इसके प्रथम सभापति बलवंत सिंह मेहता, उपाध्यक्ष भूरेलाल बयां बनाये गए। संगठन का कार्य प्रारम्भ होते ही बंद करने की कोशिश की गई तथा संगठन को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया। राज्य में जुलूस और सभा सम्मेलन करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। सरकार ने माणिक्यलाल वर्मा को मेवाड़ से निष्काशित कर दिया। साथियों की सलाह पर माणिक्यलाल वर्मा अजमेर चले गए और वहां से गाँधी का मार्गदर्शन लेने वर्धा गए। गाँधी ने सलाह दी कि सत्याग्रह तब ही शुरू करें, जब बातचीत और समझौते द्वारा प्रजामंडल पर लगाये गए प्रतिबन्ध हटाने के सारे प्रयत्न निष्फल हो जायें। उन्होंने यह भी कहा कि इस बीच मेवाड़ की जनता एवं प्रवासी मेवाड़ियों की सहानुभूति और सहयोग प्राप्त किया जाये। माणिक्यलाल वर्मा ने अजमेर लौट कर हाथी भाटा मोहल्ला में 'मेवाड़ प्रजामंडल' का अस्थायी कार्यालय स्थापित किया। माणिक्यलाल वर्मा ने अजमेर से 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमे उन्होंने मेवाड़ के शासन की कटु आलोचना की और साथ ही प्रजामंडल पर लगायी गयी पावंदी हटाने की मांग की।[प]

प्रजामंडल की कार्यकारिणी ने 4 अक्टूबर, 1938 तक प्रतिबन्ध नहीं हटाने पर आन्दोलन करने की समय सीमा निर्धारित की। जैसे–जैसे समय नजदीक आता गया जनता में उत्तेजना बढ़ने लगी, और सरकार दमन के साधनों को ज्यादा बढ़ाने लगी। 4 अक्टूबर आने से पहले ही भूरेलाल बयां, उपाध्यक्ष, मेवाड़ प्रजामंडल, को गिरफ्तार कर मेवाड़ के सराडा किले में जो काला पानी कहा जाता था, बंद कर दिया गया। 4 अक्टूबर को रमेश चन्द्र व्यास प्रथम सत्याग्रही की तरह अजमेर से मेवाड़ सरकार का कानून तोड़ने के लिए रवाना हुए और उनको भी रास्ते में खेमली स्टेशन पर गिरफ्तार करके पहले लसाडिया और बाद में सराडा भेज दिया गया। तत्पश्चात् वहां बलवंत सिंह मेहता और भवानी शंकर को भेजा गया। आन्दोलन की शुरुआत हो गयी और उसका रूप धीरे–धीरे बढ़ने लगा।[ढ]

नाथद्वारा में आन्दोलन का उग्र स्वरुप दिखाई दिया। आन्दोलन जल्द ही चित्तौड़, भीलवाड़ा, सलुम्बर एवं अन्य स्थानों पर भी फैल गया। कुल 213 गिरफ्तारियां हुईं, महिलाओं को भी गिरफ्तार किया गया। इसी बीच मेवाड़ सरकार ने धोखे से माणिक्यलाल वर्मा को 2 फरवरी, 1939 को जहाजपुर तहसील में अपने साथियों के साथ प्रजामंडल के गीत गाते हुए गिरफ्तार कर एक वर्ष का कठोर कारावास एवं 251 रुपये जुर्माना लगाया गया। इसके पश्चात् गाँधी के निर्देशानुसार प्रजामंडल ने सत्याग्रह 3 मार्च 1939 को स्थगित कर दिया।[छ]

मेवाड़ प्रजामंडल में मोहनलाल सुखाडिया का आगमन 1939 ई. के बाद ही होता है। मोहनलाल सुखाडिया का बाल्यकाल नाथद्वारा में व्यतीत हुआ और प्रारंभिक शिक्षा भी नाथद्वारा में ही हुई। उनके

पिता पुरुषोत्तम दास सुखाडिया क्रिकेट के विख्यात खिलाड़ी होने के कारण स्वाभाविक रूप से अनुशासन प्रिय थे तथा गाँधी एवं उनकी राष्ट्रीय विचारधारा में आस्था रखते थे। अपने पिता से संस्कार के रूप में उनमें देश सेवा और स्वतंत्रता संघर्ष के प्रति सम्मान एवं आकर्षण जाग्रत हुआ। एक प्रकार से यहीं से उनकी राजनैतिक चेतना का प्रारंभ हुआ। गाँधी के कार्यक्रम एव विचारों से प्रभावित होकर ही उन्होंने 1930 ई. में जब उनकी आयु मात्र 14 वर्ष थी, अपने कतिपय विद्यार्थी साथियों के साथ खादी की टोपी पहननी प्रारंभ की थी। नाथद्वारा तथा उदयपुर में विद्याध्ययन के पश्चात् वे आगे की पढ़ाई के लिए बम्बई गए तथा तकनीकी शिक्षा के लिए 'विक्टोरिया जुबिली इंस्टिट्यूट' में प्रवेश लिया। इंस्टिट्यूट में विद्याध्ययन की लगभग चार वर्ष की अवधि में उन्होंने विद्यार्थी नेता के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया तथा इंस्टिट्यूट के विद्यार्थी संगठन के महासचिव भी बने। 1939 ई. में जब वे इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा प्राप्त कर बम्बई से उदयपुर लौटे, उससे पहले ही 1938 ई.में 'मेवाड़ प्रजामंडल' की स्थापना हो चुकी थी। किन्तु मेवाड़ शासन में प्रजामंडल को अवैध घोषित कर प्रतिबंधित कर दिया था। बम्बई में रहकर मोहनलाल सुखाडिया के मन में जो राष्ट्रीय भावना एवं राजनैतिक चेतना जागृत हुई थी उस दिशा में कार्य प्रारंभ करने का उत्साह उनके मन में प्रबल था। इसलिए उन्होंने अपने कुछ सहयोगियों से मिलकर एक 'नवयुवक मंडल' की स्थापना की और इस संस्था के तत्वावधान में कार्य करना प्रारंभ कर दिया।[८]

प्रजामंडल, मेवाड़ सरकार से निरंतर प्रतिबन्ध हटाने की मांग कर रहा था। 1940 ई. के मध्य में दीवान धर्मनारायण के स्थान पर सर टी. विजयराघवाचार्य दीवान नियुक्त हुए, जो प्रगतिशील विचारों के थे। अंततः मेवाड़ सरकार ने 22 फरवरी, 1941 को महाराणा के जन्मदिन के अवसर पर प्रजामंडल से प्रतिबन्ध हटा लिया।[९]

मेवाड़ प्रजामंडल से प्रतिबन्ध हटते ही प्रजामंडल के नेताओं ने प्रजामंडल का व्यापक जनाधार बनाने का निश्चय किया। इस उद्धेश्य से सर्वप्रथम प्रजामंडल के सदस्य बनाने का सघन अभियान प्रारंभ किया और प्रदेश के जिला स्तर पर प्रजामंडल की शाखायें स्थापित की गईं। नवम्बर, 1941 में मेवाड़ प्रजामंडल का प्रथम अधिवेशन माणिक्यलाल वर्मा की अध्यक्षता में उदयपुर में शाहपुरा की हवेली में आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महामंत्री आचार्य जे. बी. कृपलानी ने किया।[5]

इस अवसर पर श्रीमती सुचेता कृपलानी तथा विजय लक्ष्मी पंडित भी उदयपुर आईं। मोहनलाल सुखाडिया ने अधिवेशन के आयोजन एव व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और वे प्रजामंडल के अग्रणी कार्यकर्ता के रूप में उभर कर आये।[10]

पाबन्दी हटने के बाद प्रजामंडल ने अपने आपको रचनात्मक कार्यो में लगाया। फरवरी, 1942 ई.में ठक्कर बापा की उपस्थिति में हरिजन सेवा कार्य मोहनलाल सुखाडिया और भील सेवा कार्य बलवंत सिंह मेहता को सौंपा।[11]

अगस्त, 1942 में बम्बई में कांग्रेस महासमिति का ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ, जिसमे महात्मा गाँधी ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया और भारतीय जनता से 'करो या मरो ' का आह्वान किया।[12] कांग्रेस के इस अधिवेशन में मेवाड़ प्रजामंडल के अध्यक्ष के नाते माणिक्यलाल वर्मा भी उपस्थित हुए थे। राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी आन्दोलन के संदर्भ में महात्मा गाँधी ने देशी रियासतों के प्रजामंडलों के अध्यक्षों से भी चर्चा की थी और उन्हें अपनी–अपनी रियासत पर यह दबाव डालने को कहा था कि वह ब्रिटिश शासन से सम्बन्ध विच्छेद कर ले।

उदयपुर पहुंचते ही उन्होंने प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं से विचार विमर्श किया प्रजामंडल की कार्यकारी समिति में मेवाड़ महाराणा को 20 अगस्त, 1942 को एक पत्र भेजा जिसमें यह चेतावनी दी कि यदि 24 घंटे के भीतर महाराणा ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध विच्छेद नहीं करते हैं तो जन–आन्दोलन आरम्भ किया जायेगा।[13] 21 अगस्त, 1942 की रात्रि में प्रजामंडल ने उदयपुर में तीज चौक में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया जिसमें भारी संख्या में नागरिक और विद्यार्थी उपस्थित हुए। विभिन्न नेताओं के प्रेरणादायक ओजस्वी भाषण हुए।[14] सारा वातावरण 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' एवं 'करो या मरो' के गगनभेदी नारों से गुंजायमान हो गया। सभा की विशालता तथा जनता के उत्साह से घबराकर मेवाड़ प्रशासन ने प्रजामंडल के अग्रणी नेताओं को भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत गिरफ्तार करने का

निर्णय लिया। 21 अगस्त, 1942 की रात को सभा में भाग लेकर लौटने के बाद अपने–अपने घरों में शांतिपूर्वक सोये हुए नेताओं को रात के अंधेरे में गिरफ्तार कर लिया गया, जिनमें माणिक्यलाल वर्मा, मोतीलाल तेजावत, बलवंतसिंह मेहता सहित मोहनलाल सुखाडिया भी सम्मिलित थे।[15] मोहनलाल सुखाडिया पर आरोप लगाया गया कि इन्होंने किशोरी लाल मश्रुवाला (हरिजन सेवक संघ) की विज्ञप्ति को अपने हस्ताक्षरों से प्रजामंडल की सभी शाखाओं में पहुंचाया था। उस समय उनके विवाह को केवल तीन वर्ष हुए थे तथा उनकी पत्नी इंदुबाला की गोद में तीन महीने की बच्ची थी। उनके पास जीविकोपार्जन का कोई साधन नहीं था। किसी नवयुवक को विचलित करने के लिए ये परिस्थतियां पर्याप्त थी। यही सोची समझी युक्ति मेवाड़ प्रशासन ने इंदुबाला सुखाडिया पर आजमाई। परिवार के हित चिंतन का नाटक कर उन्हें समझाया गया कि मोहन लाल सुखाडिया पर गंभीर आरोप है, जिनके लिए उन्हें देश निष्कासन, आजीवन कारावास या फांसी की सजा हो सकती है। अतः उन्हें अपने पति को माफी मांग कर छूटने के लिए समझाने पर जोर दिया गया। जेल में सुखाडिया से मिलने पर इंदुबाला ने उनसे कहा "जिंदगी में चाहे कुछ भी हो जाये जिस रास्ते पर चले हो उसी पर कायम रहो, माफी मांगना तो दूर किसी भी तरह का पश्चाताप करने की जरुरत नहीं है। जो भी कष्ट सामने आएगा उसे में बाहर रहकर उठायेगे, हमेशा के लिए इसे अपना सौभाग्य समझूंगी।" अपनी जीवनसंगिनी के ये प्रेरणास्पद एवं साहसपूर्ण उदगार सुन कर मोहनलाल सुखाडिया को अपने संकल्प में नया संबल प्राप्त हुआ।[16]

1944 ई. में मेवाड़ की राजनैतिक स्थिति में परिवर्तन होने लगा। फरवरी, 1944 में प्रजामंडल के नेताओं को जेल से रिहा कर दिया गया। दिसम्बर, 1945 में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का नवाँ अधिवेशन जवाहर लाल नेहरु की अध्यक्षता में उदयपुर में हुआ।[17] मोहनलाल सुखाडिया को इस अधिवेशन में स्वागत मंत्री का दायित्व सौंपा गया। मोहनलाल सुखाडिया ने अपने उत्साही साथियों–सहयोगियों को साथ लेकर इस अधिवेशन की व्यवस्था अत्यंत कुशलतापूर्वक एवं गरिमामय ढंग से संपन्न की। उनके प्रयासों से मेवाड़ की जनता ने भी अधिवेशन के लिए मुक्त हस्त से योगदान दिया। अधिवेशन के लिए चंदे के रूप में प्रजामंडल को 71,995 रूपये की राशि प्राप्त हुई।[18] रियासती जनता ने इसमें बढ़–चढ़कर भाग लिया। अधिवेशन में उत्तरदायी शासन की मांग की गयी। प्रजा मंडल में एक बार फिर से सरकार पर राजनैतिक दबाव डाला कि जल्दी ही उत्तरदायी शासन लागू किया जाये। इसी बीच दीवान की नीतियों से तंग आकर उदयपुर रियासत के सरकारी कर्मचारी हड़ताल पर चले गए, रियासत द्वारा हड़तालियों पर लाठी बरसाई गयी और उन्हें गिरफ्तार कर लिया। प्रजामंडल ने कर्मचारियों की हड़ताल का समर्थन किया। प्रजामंडल की बढ़ती हुई गतिविधियों के कारण महाराणा ने मई, 1946 में ठाकुर गोपाल सिंह के नेतृत्व में एक सुधार समिति नियुक्त की जिसमे प्रजामंडल के भी पांच प्रतिनिधि थे।

जिनमें उल्लेखनीय थे – प्रेमनारायण माथुर, हीरालाल कोठारी तथा मोहनलाल सुखाडिया।[19] इस समिति ने 29 सितम्बर, 1946 को अपना प्रतिवेदन मेवाड़ सरकार को प्रस्तुत किया। प्रतिवेदन में मेवाड़ राज्य का संविधान बनाने के लिए एक संविधान सभा गठित करने की सिफारिश की गयी। मेवाड़ सरकार को ये प्रस्ताव स्वीकार्य नहीं हुए। लेकिन महाराणा ने सरकार में लोकप्रिय प्रतिनिधियों को राज्य के मंत्री मंडल में सम्मिलित किया। इनमें मोहनलाल सुखाडिया भी शामिल थे। मंत्रिमंडल में मोहनलाल सुखाडिया को खाद्य एवं आपूर्ति विभाग का दायित्व दिया गया। 5 अप्रैल, 1948 को उदयपुर में हुए गोलीकाण्ड के विरोध में मोहनलाल सुखाडिया एवं हीरालाल कोठारी ने मेवाड़ मंत्रीमंडल से त्याग पत्र दे दिया। इसके कुछ दिनों बाद ही 18 अप्रैल,1948 को संयुक्त राजस्थान का निर्माण हो गया, जिसकी राजधानी उदयपुर तथा प्रधानमंत्री माणिक्यलाल वर्मा को बनाया गया। माणिक्यलाल वर्मा के मंत्री मंडल में मोहनलाल सुखाडिया को सम्मिलित कर उन्हें विकास एवं श्रम विभाग का दायित्व दिया गया। यहीं से मोहनलाल सुखाडिया की राजस्थान सरकार में भागीदारी प्रारंभ हुई।[20]

मेवाड़ रियासत के संयुक्त राजस्थान में विलय के पश्चात् चार चरणों में वर्तमान राजस्थान का निर्माण हुआ। जिसमें अन्य रियासतों का विलय किया गया और 1 नवम्बर, 1956 को घटनाक्रमों का अन्त, नवीन स्वतंत्र भारत के एक प्रान्त के रूप में हुआ। ब्रिटिश भारत और रियासती भारत में स्वतंत्रता का आन्दोलन अलग अलग रूपों में संचालित हुआ। जहाँ 1929 ई. के कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के पश्चात् ब्रिटिश भारत में पूर्ण स्वराज का लक्ष्य निर्धारित किया

था। वही रियासती भारत में 1938 ई. के पश्चात् राजाओं के शासन के अंतर्गत ही उत्तरदायी शासन की मांग की गयी। राजस्थान में मेवाड़ में प्रजामंडल आन्दोलन भी इसी मांग के तहत प्रारंभ हुआ था। इस आन्दोलन के दौरान मेवाड़ रियासत में स्वतंत्रता के कई समर्थक नेता उभर कर आये जिनमें से एक थे मोहनलाल सुखाडिया, इन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी होते ही जैसे ही मेवाड़ आये तो तुरंत ही अपने आप को मेवाड़ की जनता के कार्यो के लिए समर्पित कर दिया। मेवाड़ प्रजामंडल आन्दोलन के दौरान इनकी सक्रियता का प्रभाव राजस्थान की राजनीति पर पड़ा, लोगों ने इनकी नेतृत्व क्षमता को पहचाना, जिससे आगे चलकर आधुनिक राजस्थान के निर्माण में इनका योगदान अभूतपूर्व रहा।

संदर्भ :

1 बी. एल. पानगाड़ियाः राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007, पृष्ठ संख्या 53

2 मनोहर कोठारीः भारत के स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान, राजस्थान स्वर्ण जयंती समारोह समिति, जयपुर, 2003, पृष्ठ संख्या 235

3 मोहनलाल सुखाडियाः मेवाड़ प्रजामंडल (1938–1945), कांग्रेस शताब्दीं समारोह समिति, उदयपुर, 1995, पृष्ठ संख्या 1

4 बी. एल. पानगाड़ियाः राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007, पृष्ठ संख्या ब्ध्(55

5 मोहनलाल सुखाडियाः मेवाड़ प्रजामंडल (1938–1945), कांग्रेस शताब्दी समारोह समिति, उदयपुर, 1995, पृष्ठ संख्या ७(ज्ञ

6 गिरीश नाथ माथुर द्वारा आकाशवाणी पर प्रसारित मेवाड़ प्रजामंडल की भूमिका, दिनांक : 21.02.1997

7 लक्ष्मी चंद गुप्तः आधुनिक राजस्थान के शिल्पी –श्री मोहन लाल सुखाडिया, प्राकृत भारती अकादमी, 2014, पृष्ठ संख्या 27–28

8 उदयपुर कोन्फिडेन्शिअल बस्ता नं. 10,क्रमांक 111, पृष्ठ संख्या 71–72

9 रामगोपाल शर्माः राजस्थान में प्रजामंडल आन्दोलन, भाग–5,राजस्थान स्वर्ण जयंती समारोह समिति, जयपुर, 2003, पृष्ठ संख्या 147

10 लक्ष्मी चंद गुप्तः आधुनिक राजस्थान के शिल्पी –श्री मोहन लाल सुखाडिया, प्राकृत भारती अकादमी, 2014,पृष्ठ संख्या 54

11 मोहनलाल सुखाडियाः मेवाड़ प्रजामंडल (1938–1945), कांग्रेस शताब्दी समारोह समिति, उदयपुर, 1995, पृष्ठ संख्या 4

12 हरिजनः अगस्त, 1942

13 विनीता परिहारः राजस्थान में प्रजामंडल आन्दोलन, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2016,पृष्ठ संख्या 99

14 मनोहर कोठारीः भारत के स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान, राजस्थान स्वर्ण जयंती समारोह समिति, जयपुर, 2003, पृष्ठ संख्या 258

15 लक्ष्मी चंद गुप्तः आधुनिक राजस्थान के शिल्पी –श्री मोहन लाल सुखाडिया, प्राकृत भारती अकादमी, 2014,पृष्ठ संख्या 56

16 लक्ष्मी चंद गुप्त, कन्हैया लाल कोचर, सीताराम झालानी : राजस्थान के प्रकाश स्तंभ, भाग–5,राजस्थान स्वर्ण जयंती समारोह समिति, जयपुर, 2003, पृष्ठ संख्या 217, 218

17 भगवान दास केलाः देशी राज्यों की जनजागृति, भारतीय ग्रंथमाला, दारागंज, इलाहबाद, 1948, पृष्ठ संख्या 242

18 लक्ष्मी चंद गुप्तः आधुनिक राजस्थान के शिल्पी –श्री मोहन लाल सुखाडिया, प्राकृत भारती अकादमी, 2014,पृष्ठ संख्या 58

19 रामगोपाल शर्माः राजस्थान में प्रजामंडल आन्दोलन, भाग–5,राजस्थान स्वर्ण जयंतीसमारोह समिति, जयपुर, 2003, पृष्ठ संख्या 164

20 लक्ष्मी चंद गुप्तः आधुनिक राजस्थान के शिल्पी –श्री मोहन लाल सुखाडिया, प्राकृत भारती अकादमी, 2014,पृष्ठ संख्या 33